पहला अध्याय

** हिमांशु जोशीजी का व्यक्तित्व और कृतित्व **

1) जन्म और बाल्यकाल :-

नई कहानी के अग्रणी लेखक हिमांशु जोशीजी का जन्म 4 मई 1935 ई. को उत्तर प्रदेश के पर्वतीय अंचल अल्मोड़ा जिले के जोस्यूड़ा (जोशीयों का गांव) नामक गांव में हुआ था । जन्म तो आपका " जोस्यूड़ा " गांव में हुआ, परन्तु बचपन " खेतीखान " नामक छोटे से कस्बे में बीता । यह स्थान जोस्यूड़ा से लगभग तीन मील दूरी पर लोहाघाट से अल्मोड़ा जानेवाली सड़क के किनारे था । यहाँ मिड़िल स्कूल तक शिक्षा थी, डाकखाना था, बाजार में कुल 20 - 25 छोटी बड़ी दूकानें भी थीं ।

2) माता - पिता :-

हिमांशु जोशीजी के पिताजी का नाम श्री. पूर्णानन्द जोशी और माताजी का नाम तुलसीदेवी था । आपके पिता स्वाधीनता संग्राम से सक्रिय रूप से जुड़े हुए एक स्वतंत्रता - सेनानी थे । उन्हें कई बार जेल यात्राएँ भी करनी पड़ी थीं । आपके पिता स्वातंत्र्य सेनानी के साथ - साथ एक उदार - हृदय व्यक्ति भी थे, जिससे समाज में उनको महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ था । वे यथाशक्ति जरूरतमंदों की सहायता करते थे । उनका सारा जीवन देश - सेवा में व्यतीत हुआ । जब आप सात साल के थे तब सन् 1941 ई. में आपके पिताजी का देहान्त हुआ और आप बचपन में ही पितृ - प्रेम से वंचित हो गये । सन् 1986 ई. में आपकी माताजी का देहान्त हुआ ।

3) परिवार :-

हिमांशु जोशीजी का संयुक्त परिवार था । जोस्यूड़ा के अतिरिक्त अनेक गावों में पुश्तैनी जायदाद थी । आर्थिक दृष्टि से आपका संपन्न परिवार था । गावों में सामाजिक प्रतिष्ठा भी थी । आपके पिता के कई बार जेल जाने और ब्रिटिश सरकार के विरुध्द संघर्ष करने के कारण परिवार के लोगों को भी अनेक यंत्रणाएँ झेलनी पड़ीं । फिर भी संयुक्त परिवार के कारण ही आपका भरण - पोषण ठीक ढंग से चल रहा था । पिताजी के देहान्त के बाद धीरे - धीरे परिवार में अनेक कठिनाईयाँ उभरने लगी । और कारोबार शिथिल हो गया । दायित्व निरन्तर

बढ़ते गये, इससे परिवार में संघर्ष खड़ा हो उठा और आय के साधन सीमित होने लगे ।

आज आपका छोटा और सुखी परिवार है । इस सुखी परिवार में आपको सहयोग देनेवाली आपकी पत्नी और आपके तीन बच्चे हैं ।

4) **शिक्षा - दीक्षा** :-

जोशीजी की आरंभिक शिक्षा खेतीखान में हुई । खेतीखान में मिड़िल स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद आप वहाँ से 64 मील दूर नैनीताल गये । सन् 1948 ई. में नैनीताल जाने के लिए मोटार मार्ग नहीं था, इसलिए आपका पैदल ही आना - जाना होता था । आप नैनीताल में 5 साल रहे, परन्तु आर्थिक अभावों के कारण आगे विद्यालय में विधिवत पढ़ना संभव न होने के कारण आपने अपनी आगे की शेष पढ़ाई प्राइवेट परीक्षाओं से पूरी की । धन के अभाव के कारण इच्छा होते हुए भी आप विश्वविद्यालय में दाखिल नहीं हो सके । विश्वविद्यालय में विधिवत पढ़ने की आपकी बड़ी इच्छा थी, जो आर्थिक - परिवारिक संघर्षो के कारण कभी पूरी नहीं हुई । फिर भी इन्हीं संघर्षों में भी आपने स्नातक तक शिक्षा हासिल की जो बड़ी गौरव की बात है ।

5) **नौकरी** :-

पहले पहल आपने (जोशीजीने) नेपाल की सरहद पर नैनीताल जिले में टनकपुर नामक कस्बेमें कुछ समय तक अध्यापक की नौकरी की, । टनकपुर में आर्थिक अभाव के कारण आपको पढ़ाने के साथ - साथ टयूशनें भी करनी पड़ीं । इन्हीं दिनों आप नौकरी के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठे थे और हर प्रतियोगी परीक्षाओं में आपका चुनाव हो गया था । परन्तु आपके मन में कुछ और ही करने का इरादा पनपने के कारण यह सब आपको निरर्थक लगने लगा ।

बचपन से ही कुछ बनने की और लिखने पढ़ने की अदम्य लालसा आपके मन में थी । इस मन को चुनौती या प्रोत्साहन मिला टनकपुर में जहाँ आप आध्यापकी कर रहे थे । वहाँ

आपके पढ़ने में महापंडित " राहुल सांकृत्यायन " की आत्मकथा " मेरी जीवन यात्रा " आ गयी, जिससे आप इतने प्रभावित हुए कि बिना त्यागपत्र दिए ही दिल्ली पहुँच गये ।

लिखने - पढ़ने की इच्छा से साहित्यकार बनने का सपना लेकर आप दिल्ली की भीड़ - भरी सड़क पर आ गए । परन्तु इन्हीं दिनों आपके सामने बेरोजगारी और बेकारी की समस्या थी । दिल्ली आते ही आप मिल में रहनेवालें एक रिश्तेदार के पास रहा करते थे, जिसके मालिक की जमानत से आपको " दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी " में सदस्यत्व मिला था । इन्हीं दिनों नौकरी न मिलने के कारण आप एकाध टयूशन करते और दिनभर पुस्तकालय में बैठकर लेख लिखा करते थे । और अच्छी कहानियों के अनुवाद भी तैयार करते थे । लिखने की अभिरुचि और सहृदय संपादक के सहयोग के कारण ही आप " इन्द्रधनुष प्रतिमान " हिन्दी डायजेस्ट के अवैतनिक उपसम्पादक बने । इसतरह बेरोजगारी की समस्याओं से गुजरते और संघर्षों से जुझते हुए आप अपने जीवन मार्ग में स्थिर हो गये ।

6) **बचपन की इच्छाएँ :-**

बचपन से ही कुछ असाधारण - सा करने की आपके दिल में उमंग थी । अस्पष्ट भाव था । " शान्तिनिकेतन " में पढ़ने की आपकी बड़ी इच्छा थी । इसके अलावा अभिनय और चित्रकारिता का भी बड़ा शौक था । बचपन में आप चित्र बनाने के साथ - साथ नाटकों में भी भाग लेते थे । आपने कई पुरस्कार भी जीते थे । आपकी " लखनऊ आर्ट कॉलेज " में 5 साल का पाठयक्रम पूरा करने की भी इच्छा थी । परन्तु इस दिशा में आगे बढ़ने का कोई भी मार्ग नहीं मिल पाया । आगे भी अपकी यें सारी कामनाएँ पूरी नहीं हो सकी ।

7) **लेखन :-**

नई कहानी के सशक्त कहानीकार हिमांशु जोशी जी हिन्दी साहित्य जगत में एक श्रेष्ठ सृजनशील लेखक और पत्रकार के रूप में प्रख्यात हैं । आप गत तीस - पैंतीस वर्षोंसे लिख रहे हैं । जोशीजी के हृदय में साहित्य - साधना का बीजारोपन बचपन में ही हुआ ।

शिक्षा काल में ही आपकी रुचि साहित्य की ओर गई थी । आपने अपनी साहित्य की सेवा कविता से तो शुरू की और बीच में उसे छोड़कर कहानी और उपन्यास आदि लिखने की ओर प्रवृत्त हुए ।

आपने अपनी पहली कविता उस समय लिखी थी, जब आप छठी - सातवी कक्षा के छात्र थे, आपकी उम्र कोई 13 - 14 साल की थी और उस समय सन् 1948 ई. में गांधीजी का देहान्त भी हो गया था । अपनी पहली कविता ने लिखने की प्रेरणा दी जो चार - पाँच वर्ष तक निरन्तर उन्हे लिखवाती रही । आपके सिर पर कविता का पागलपन इतना हावी हो गया था कि खेलते, घूमते, पढ़ते, खाते, सोते और रात - दिन जागकर आप कविताएँ लिखा करते थे । इतना ही नहीं परीक्षा की घड़ियों में भी आपको कविता याद आती थी । आप कक्षा में भी, पीछे बैठकर तुकबंदियाँ लिखा करते थे । इसका एक मजेदार किस्सा है कि जब अर्थशास्त्र के अध्यापक जमील अहमद एक दिन कक्षा में बोले " जब मैं मालथुस की थ्यौरी समझा रहा था, तुम सब स्टुडेंट्स मेरा मुँह देख रहे थे - आपकी और अंगुली से संकेत करते कहतें हैं, " देखिए, एक यही स्टुडेंट था जिसने गरदन नहीं उठाई . . . चुपचाप नोटस् लेता रहा . . . । " इस कथन से आपके मित्र हंस पड़े, क्योंकि उन्हें मालूम था कि आप नोटस् लिखने के बजाय तुकबंदियाँ लिख रहे थे । इसका परिणाम यह हुआ कि आपके मित्रों को सीट पर खड़े रहने की सजा हो गई । इसतरह आपका कविता लिखने का क्रम चल रहा था ।

बचपन में कुछ एक तुकबंदियों की रचना करने पर आप अपने आपको " सर्वज्ञ " समझने लगे, मन मस्तिष्क सातों आसमानोंपर मंडराता रहा । परन्तु जैसे - जैसे अनुभव और उम्र बढ़ती गई वैसे - वैसे आप समझने लगे कि मुझमें और भी कुछ कमी रह गयी है । इसके पश्चात् आपके पाँव धरती पर टिकने लगे और आपकी कहानी ने जन्म लिया । ये बात आपके समझ में ही नहीं आई कि कब और कैसे आप आसमान से धरती पर उतर आये ।

8) **कृतियाँ** :-

आप के व्दारा रचित साहित्य निम्न - प्रकार हैं । आपकी पहली मौलिक कहानी

" बुझे दीप " जैनेन्द्र के प्रोत्साहन से सन् 1954 ई. में प्रकाशित हुई, जिससे आपका आत्मविश्वास दूभर होकर आप तीव्र गति से कहानी लिखने लगे ।

कहानी संग्रह :-

आपके कुल मिलाकर 7 कहानी - संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । सन 1965 ई. में आपका पहला कहानी - संग्रह " अन्ततः " प्रकाशित हुआ । इसके बाद आपके "रथचक्र" तथा " मनुष्य - चिन्ह " कहानी - संग्रह प्रकाशित हुए । तदनन्तर आपका नया कहानी - संग्रह " जलते हुए डैने " प्रकाशित हुआ । जो एक नई दिशा - दृष्टि का सूचक है । इसके बाद कई अच्छी कहानियों का संग्रह " हिमांशु जोशी की विशिष्ठ कहानियाँ " शीर्षक से प्रकाशित हुआ । इसी प्रकार " इक्यावन कहानियाँ " नामक कहानी संकलन प्रकाशित हुआ और अभी - अभी " तपस्या तथा अन्य कहानियाँ " नामक कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ ।

उपन्यास :-

कहानी संग्रहों के साथ - साथ आपके उपन्यास भी प्रकाशित हुए । आपका पहला उपन्यास ' बुराँश फूलते तो है " सन् 1965 ई. में प्रकाश में आया, जो बाद में " अरण्य " नाम से छपा । " अरण्य ", " छाया मत छूना मन ", " समय साक्षी है '", " कगार की आग'' " तुम्हारे लिए ", " सु - राज ' आपके बहुचर्चित उपन्यास हैं । आपका " महासागर " उपन्यास एक नयी दिशा दृष्टि की ओर इंगित करनेवाला है । आपने बच्चों के लिए " तीन तारे " नामक एक बाल उपन्यास भी लिखा है, जो इलाहाबाद से प्रकाशित बाल मासिक पत्र " मनमोहन " में धारावाहिक रुप से छपा था । इन दिनों आप एक नया उपन्यास लिखने के लिए सामग्री जुटा रहे हैं ।

कविता संग्रह :-

कथा साहित्य के बीच में कभी - कभी आप कविताएँ भी लिखते रहे हैं ।

परन्तु आप कवि के रूप में पहचाने नहीं जाते । आपका एक कविता - संग्रह सन् 1981 ई. में " अग्निसम्भव " नाम से छपा ।

संकलन :-

जोशीजी का " उत्तरपर्व " नाम से एक संकलन भी प्रकाशित हुआ है । इसमें 1) ' तुम्हारे लिए " 2) " काछा " नामक दो उपन्यास हैं । 1) ' अपने ही कस्बे में, " 2) " अक्षांश ", 3) " यह सब " अ " संभव हैं, 4) " बरस बीत गया ", 5) समुद्र और सूर्य के बीच ", 6) " एक वटवृक्ष था ", 7) " तरपन ", 8) " जो घटित हुआ ", 9) " पाषाण - गाथा ", 10) " नई बात " । ये सभी कहानियाँ इस संकलन में संग्रहीत हैं । इसीप्रकार ही जोशीजी का यात्रा साहित्य भी इसमें संकलित हैं ।

कुल मिलाकर दो उपन्यास, दस कहनियाँ और यात्रा - साहित्य " उत्तरपर्व " नामक पुस्तक में संकलित हैं ।

यात्रा - वृत्तांत :-

आपने " यात्राएँ " नामक पुस्तक में यात्रा - वृत्तांत भी लिखे हैं, जिनमें आपका निजी अनुभव प्रस्फुटित हुआ है ।

बाल - साहित्य :-

आपने बाल - साहित्य लिखकर हिन्दी की इस दिशा में भी विशिष्ट सेवा की है । आपका बाल साहित्य " तीन - तारे " (उपन्यास), " अग्नि सन्तान ", " हिम का हाथी ", " सुबह के सूरज ", संसार की चुनी हुई लोककथाएँ ", " बचपन की याद रही कहानियाँ ", " जहाँ सूरज नहीं डूबता " आदि हैं । कहानीकार के अतिरिक्त आपने बाल - साहित्य में अच्छी ख्याति प्राप्त की हैं । " नार्वे ", " काला पानी ", " भारतरत्न गोविन्द वल्लभ पन्त" आदि आप की रचनाएँ हैं ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

संपादित कहानियाँ :-

आपने कई कहानियाँ सम्पादित भी की हैं । जो इस प्रकार हैं - " चीड़ के वनों से", " अंधेरे के खिलाफ समझौता नहीं ", " श्रेष्ठ समान्तर कहानियाँ ", और " श्रेष्ठ भारतीय कहानियाँ "।

पुरस्कार :-

हिमांशु जोशीजी के उपन्यास और कहानी - संग्रह को अनेक पुरस्कार मिले हैं । आपके " अरण्य " नामक उपन्यास को " उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान " का पुरस्कार मिला । उत्तर प्रदेश सरकार ने आपके " छाया मत छूना मन ", " अरण्य " और " मनुष्य - चिन्ह " पुस्तकों पर पुरस्कार देकर आपके साहित्यिक 'कार्य का सम्मान किया है । " हिन्दी अकादमी दिल्ली " और " राजभाषा विभाग " बिहार सरकार की ओर से " हिमांशु जोशी की कहानियाँ" पर पुरस्कार मिले हैं ।

अनुवाद :-

आपके कई उपन्यासों और कहानियों के अनुवाद प्रायः पंजाबी, गुजराती, तमील, उर्दू, मलयालम, डोगरी, ओरिसा, मराठी, कोंकणी, कनडा, तेलगू, बंगाली आदि भारतीय भाषाओं में हुए हैं । भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, नार्वेजियन, जपानी, चीनी, नेपाली, ब्रम्हीज, स्लाव आदि अनेक भाषाओं में भी अनुवाद हुए हैं । " तुम्हारे लिए " उपन्यास का मराठी अनुवाद " तुझ्याचसाठी " हुआ है, जिसका डॉ पद्माकर जोशीजी ने अनुवाद किया है ।

कुछ कहानियों पर आधारित नाटकों का मंचन भी हुआ है ।

अन्य :-

आपने अनेक पद भूषित किए हैं । आप International Forum of Hindi writers के Secretary General हैं । आप भारत के लेखक संघ (Authors Guild of India) के उपाध्यक्ष हैं । आप प्रधानमंत्री महोदय की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय हिन्दी समिति के सदस्य हैं और मानव

संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार व्दारा रचित हिन्दी सलाहकार समिति के भी आप सदस्य हैं ।

अन्य कतिपय सांस्कृतिक और साहित्यिक संस्थानों से भी आप जुड़े हुए हैं । फिल्म लेखक संगठन बंबई के आप सदस्य हैं ।

त्रिवेंद्रम में प्रस्तुत अंतरराष्ट्रिय फिल्म समारोह में सम्मिलित " सु-राज " फिल्म आपके इसी नाम के उपन्यास पर आधारित थी ।

आपने रेडिओ, नाट्यगृह, टी. वी. के लिए लिखा है । " तुम्हारे लिए " उपन्यास के आधार पर इसी नामकी एक टी. वी. मालिका प्रसारित हो चुकी है ।

इन दिनों आप " साप्ताहिक हिन्दुस्तान " में सहसंपादक का काम कर रहे हैं । आप इस मशहूर साप्ताहिक के विशेष प्रतिनिधि भी हैं ।

प्रवास :-

आपने देश - विदेश का भ्रमण किया है । आपने अमरिका, नार्वे, स्वीडन, डेन्मार्क, जर्मनी, फ्रान्स, ग्रेटब्रिटन, मॉरिशस आदि देशों की सफल यात्राएँ की हैं ।

अनुवाद :-

सन् 1954 ई. में आपकी " निर्वासन " नामक हिन्दी अनूदित कहानी इन्द्रधनुष में प्रकाशिक हुई थी, जो टालसटाय की कहानी " **The Long Exile**" का अनुवाद थी । यह आपकी पहली अनूदित कहानी थी ।

9) **व्यक्तित्व और कहानीकला** :-

हिमांशु जोशीजी का व्यक्तित्व अंधकार में चमकनेवाले चंद्रमा के समान शीतल है । इनके व्यक्तित्व में एक ऐसा तेज है, जो लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करता है । निरन्तर

साहित्य - सृजन में सलग्न रहनेवाले हिमांशुजी अपने नाम की तरह जीवन में आनेवाले संकटरूपी अंधकार में चंद्रमाके समान चमकते रहे । इनका व्यक्तित्व शीतल होते हुए भी तेजोमय बन गया । आपको हर अंधकार में दिपदिपाती उजाले की किरण दिखाई देती है ।

आप कुमाऊँ इलाके में रहते थे । आपके सामने पत्थर - ककडों से भरा, हरी - भरी चादरें ओढे बर्फ से सफेद तराई का दूर - दूर तक फैला विस्तृत ऐसा आँचल था । इस स्थिति में भी आप कभी निराश नहीं हुए । आपका मन कभी हारा नहीं, हमेशा वह आशा की ओर प्रवृत्त हुआ है ।

बचपन से ही आपको संघर्षों का सामना करना पड़ा । संघर्ष से जुझते समय आपका मन कभी निराश नहीं हुआ । ऊपर से जीवन संघर्ष अभिशाप न लगकर वरदान लगने लगा, क्योंकि संघर्षों ने आपको बहुत कुछ सिखाया है । पहले से ही आप भावुक हृदय के थे और परिस्थितियों के कारण और भी भावुक हो गये । इसी कारण ही आपके लेखन में संवेदनाओं की तीव्रता आ गयी हैं ।

आपने तो विधिवत पाठशाला में पढ़ने से पहले ही यह जिंदगी की पाठशाला में पढ़ लिया था कि, अभाव और उपेक्षा का दंश कितना पीड़ा - प्रद होता है ।

कुछ बनने की जिज्ञासा और मनुष्य पर की आस्था के कारण आपके पॉव ड़गमगाने के बजाय स्थिर हो गये । उन दिनों आपको कुहासे के पार का प्रकाश दिखाई देता था । इसी कारण ही आपको सुख - दुःख का क्रम बदसूर लगने के बजाय सुरबध्द लगने लगा । और हँसते हुए हिन्दी साहित्य में आपने अपना कदम रख दिया । इसलिए निराशा आपको छोड़कर कहीं दूर भाग गयी ।

बचपन से ही आपका व्यक्तित्व दूसरे बच्चों से अलग था । जो समय बच्चों के लिए सुनहरे सपने सजाने के होते हैं उसी अवस्था में आप सुख - दुःख की कहानियों के ताने - बाने बुनने लगे थे । आप अपने लेखन में इतने तन्मय हो गये थे कि खाते - पीते, चलते - फिरते इतना ही नहीं परीक्षा के दिनों में भी रातरात जागकर कविताएँ, कहानियाँ लिखा करते थे।

आपके पात्र तो हमेशा आपका पीछा करते थे । इससे आपको तनिक भी एकांत नहीं मिलता था । उन दिनों आपको और कहानियों को अलग करना मुश्किल था । पहले पहल आप लज्जावश कहानियाँ छपाने के बजाय, छिपाने की कोशिश ही अधिक करते थे ।

आपका जन्म पर्वतीय अंचल में हुआ आप गावों - कस्बों में खेले और नगरों - महानगरों में जीवन जीया । परन्तु आप मुलतः गावों से ही जुड़े रहे और सदैव पहाड़ों के धुंधले चित्र छाया की तरह आपका पीछा करते रहे । आपने पहाड़ी समाज का अध्ययन बारीकी से किया है और पहाड़ी लोगों का जीवन बहुत निकट से देखा है, चाहे वे महानगर में बस हों या गांव - कस्बें में । ज्यों - ज्यों आप लोगों के निकट आए त्यों त्यों आपको पता चला कि इनके जीवन में सुख से अधिक दुःख ही भरा है । इस दुनिया में आपको निश्छलता और निरीहता से अधिक छल - कपट ही दिखाई देने लगा । एक ओर आपको दुनिया पराई लगने लगी तो दूसरी ओर उनसे अपनापन लगने लगा । आपने सोच लिया कि इसमें मित्रता और स्नेह की भावना भी कुछ कम नहीं हैं । इसी कारण ही आम - आदमी का दुःख आपका अपना बन गया, जिससे आपकी कहानियाँ सजीव बन गयी हैं ।

किसी भी साहित्यकार का साहित्य अपने व्यक्तित्व से अलग नहीं होता । जोशीजी का साहित्य भी अपने व्यक्तित्व से अलग नहीं है । अपनी कहानियों में दूसरों का संघर्ष चित्रण करनेवाले जोशीजी के जीवन का सही प्रतिबिंब भी उनकी कहानियों में उभर आया है । इसके बारे में उनके विचार है - " जब आदमी दूसरों के जीवन संघर्ष को चित्रित कर रहा होता है, तब कहीं, वह किसी रूप में अपने ही संघर्षों को मुखरित करने के प्रयास में लगा रहता हैं । साहित्य कहीं जीवन का ही प्रतिबिंब होता है, किसी रूप में शायद, इसलिए मन को छूता ही नहीं, मन की अंतहीन गहराई में भी प्रवेश करता है ।"[1]

नई कहानी के अन्दोलन के कहानीकारों में जोशीजी एक सशक्त कहानीकार ही नहीं बल्कि एक नये रास्ते की तलाश करनेवाले और अपने ढ़ंग से कहानी को प्रस्तुत करनेवाले कहानीकार हैं । इसी कारण इनकी गणना नये कहानीकारों में की जाती हैं । उनके उपन्यास और कहानियाँ लोकप्रिय तो हो ही गई, साथ - साथ विचारशील पाठकों में प्रशंसित भी हुई हैं। हिमांशुजी हिन्दी साहित्य - जगत में एक श्रेष्ठ सृजनशील लेखक ही नहीं पत्रकार के रूप में

भी प्रसिध्द हैं । आप एक साथ समान्तर रूप से लेखक और पत्रकार के रूप में चल रहे हैं । इसतरह आपका व्यक्तित्व व्यापक हो गया है ।

आज आप अपनी पिछली जिंदगी की ओर मुडकर देखते हैं तो आपको ऐसा महसूस होने लगता हैं कि जिन पढ़ाई के दिनों में आपको विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं हुई, उस समय आपने हताश न होकर, समय का सदुपयोग किया और आप लेखन की ओर प्रवृत्त हुए । बड़ा लाभ आपको आगे की जिंदगी में हुआ । आज आपके हाथों में जीवन भर की ऐसी महत्वपूर्ण पूंजी इकट्ठा हुई हैं कि जो कागज रूपी पन्नों में निर्जीव होते हुए भी संजीवनी का काम करती है । इसमें आपके ह्दय की धड़कन, जागते सपने और जीवित सत्य है । यह एक ऐसी अमर निधि है, जो कोई भी खींचकर नहीं ले जा सकता ।

इस अमर निधि के पीछे जो व्यक्तित्व खड़ा है, उसपर सहजता, सरलता और स्वाभाविकता आदि कबीर के गुणों का प्रभाव पड़ा है । जिसके कारण आपने अनुभूति का सत्य सहज शब्दों में कहानियों में अभिव्यक्त कर पाठकों तक पहुंचाने का काम किया है । आपही तो कहते हैं, " जीवन का यथार्थ जितने सहज' शब्दों में अभिव्यक्त होगा, उतना ही मानव मन को प्रभावित करेगा । कबीर का यह गुण किसी भी सफल साहित्य का प्रथम लक्षण है ।"[2]

यही कारण है कि जोशीजी की कहानियाँ पढ़ते समय लेखक के व्यक्तित्व की छाप पाठकों पर इतनी पड़ती है कि पाठकों को लगता है, हम कहानी न पढ़कर लेखक की आपबीतीही पढ़ रहे हैं । इसतरह हिमांशु जोशीजी ने कहानी के माध्यम से व्यक्ति तथा समाज का जो स्वाभाविक, सजीव चित्रण किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है ।

कहानीकला :-

हिमांशु जोशीजी को बचपन से ही लिखने का व्यसन था । आप पहले पहल आत्म प्रेरणासे ही कविता लिखा करते थे । यह दौर निरन्तर चार - पाँच साल तक चलता ही रहा था । ऐसे ही एक दिन आपने कहानी लिखना आरंभ किया और आपकी कविता छूट गयी । उस दिन से जो कहानी का दौर शुरू हुआ है वह आजतक धुआँधार के रूप में चलता रहा है ।

जोशीजी राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा से प्रभावित होकर कुछ करने की आकांक्षा लेकर दिल्ली आये । यहाँ आते ही जैनेन्द्रकुमार, शान्तिप्रिय द्विवेदी, वृन्दावनलाल वर्मा, अमृतलाल नागर आदि श्रेष्ठ साहित्यकारों का स्नेह आपको मिला । आपको तो पहले से ही लिखने का शौक था, उसमें दिल्ली के साहित्यिक वातावरण ने और लाभान्वित कर दिया । यहाँ आप कड़ी मेहनत के साथ लिखने लगे । जब - तक रचना मन के मुताबिक नहीं बनती तब - तक लिखना, काटना और उसे सुधार ने का काम चल रहा था । इसतरह आप सृजनकार्य में मग्न हुए थे और आज भी आपकी यह आदत कायम है ।

कहानी लिखना आसान होता है परन्तु उसे छपवाने के लिए देना हमेशा कठिन होता है, क्योंकि सफलता - असफलता का द्वंद्व मन में शुरू होने के कारण साहस जुटाना मुश्किल होता है । इसीकारण ही जोशीजी पहले पहल कहानियाँ लिखा करते थे, लेकिन छापने के लिए नहीं देते थे । एक बार साहस करके हाथ में कागज के पन्ने गोलाई में लिपटकर ऋषि भवन गये । वहाँ आपकी भेंट जैनेन्द्र से हुई । उस समय वे टालस्टाय का कथन कर रहे थे, "आदमी के पास खाने के लिए एक मुँह है तो कमाने के लिए दो हाथ । उसी समय अचानक उनका ध्यान आपके हाथ की ओर गया और उन्होंने आपसे पूछा " यह क्या है ? पर आपने अपनी कहानी छिपाने के प्रयत्न में " कुछ नहीं " ऐसा जवाब दिया । जैनेन्द्रजी के दुहराने के बाद आपने अपनी कहानी उन्हें पढ़ने के लिए दे दी । जैनेन्द्रजी ने कहानी पढ़ी और कहा "कहानी मुझे अच्छी लगी है, छपने के लिए दे दो, कहीं भी छप जायेगी ।"[3] इस कथन से आपका आत्मविश्वास बढ़ गया और कहानी छापने के लिए दे दी, जो बहुत दिनों के पश्चात सज - धजकर राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक पत्र के रविवासरीय में " बुझे दीप " नाम से छपी और आप प्रशंसा के पात्र हो गये । इससे आप बहुत प्रसन्न हुए । क्योंकि आपको उपहार के रुप में प्रशंसा के दो बोल मिले थे और आपने अपनी मंजिल का सही रास्ता चुन लिया था । आपके लिए इससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती है ?

आपकी प्रसन्नता को थोडी देर के लिए ग्रहण लग गया था, क्योंकि इस कहानी का बड़ा असर एक महिला पर हुआ । टनकपुर में शर्माजी नामक एक व्यक्ति थे जिनकी पत्नी बीमार थी । उसने यह कहानी पढ़ी और जीने की इच्छा छोड़ दी । शर्माजी आपसे कह रहे थे, "आपकी कहानी पढ़कर मेरी रूग्ण पत्नी ने जीने की आस छोड़ दी है । वह कहती है कि

मेरे साथ सब घटित होगा जो उस कहानी के नायक के साथ हुआ था ।"[4] उस समय आपको बहुत दु:ख हुआ । जो साहित्य जीने की प्रेरणा देता है, वही मरने के लिए भी प्रेरित करता है । परन्तु आपने उस महिला को समझाया कि " कहानी इसलिए तो कहानी कहलाती है कि वह सच नहीं होती ।"[5]

आप तो हमेशा निराशा से दूर रहे, परन्तु इस कहानी ने एक व्यक्ति को निराश कर दिया था । इसलिए आपको लगने लगा की " भविष्य में मुझे ऐसा लिखने के प्रति सचेत रहना चाहिए जो व्यक्ति को घोर निराशा के अंधकार में धकेल दिए जाने के लिए विवश करें ।"[6]

इस घटना से यही प्रमाणित हो जाता है कि आपकी कहानियाँ जीवन और सत्य के कितनी निकट हैं और इनका प्रभाव पाठकों पर इतना पड़ता है कि पाठक पढ़ते ही भावमग्न हो जाते हैं ।

हिमांशु जोशीजी की कहानियों में विशेषत: दुर्बल पक्ष का ही शोषण अधिक दिखाई देता हैं । जोशीजी हमेशा दुर्बल का ही पक्ष लेना सार्थक समझते हैं । उनकी कहानियों में चाहे स्त्री हो, चाहे पुरुष हमेशा जो शोषित, पीड़ित, संत्रस्त और दु:खी है उनका ही चित्रण हुआ है । कमजोर व्यक्ति अपने अस्तित्व का संघर्ष कभी नहीं कर सकता । लेखक उनके संघर्ष में सहभागी होकर अपने कर्तव्य का पालन करते हैं ।

लेखक का निजी जीवन - संघर्ष, उपेक्षा और अभाव का रहा है । गांवों में, कस्बों में जो विसंगतियाँ विषमता पीड़ाओं और शोषणयुक्त व्यवस्था को निकट से देखा, जीया, उसीका आघात ह्दयपर होकर उनकी लेखनी व्दारा प्रस्फुटित हुआ हैं, इसलिए उनके लेखन में जीवंतता आ गई है ।

हिमांशुजी के ह्दय में पहाड़ी जन - जीवन के प्रति अटूट स्नेह भरा हुआ है । स्वतंत्रता - प्राप्ति के उपरान्त बहुसंख्यक जनता को अभावों, कष्टों एवं पीड़ाओं में लीन देखकर आपने स्वदेशी शासकों के अनुचित कार्यों के प्रति प्रखर व्यंग्य बाणों की बौछार की है । उनकी कहानियों में यथार्थ के सुदृढ धरातल पर मानव - जीवन के चित्र अंकित हुए हैं ।

इसलिए हम निःसंदेह कह सकते हैं कि उनकी कहानियों में पहाडी जीवन का प्रतिबिंब चित्रित हुआ है ।

हिमांशु जोशीजी के लिए साहित्य मनोरंजन का साधन नहीं है । आपने साहित्य को एक माध्यम के रूप में अपनाया है । आपकी कहानियों में आम - आदमी इधर - उधर बिखरे हुए हैं । जो दलित - शोषित और अपनी लड़ाई स्वयं नहीं लड सकते ऐसे लोंगो के प्रति आपके मन में अपार आस्था है । इसी कारण ही आपके कहानी संसार में दुःखी, आहत और मुसीबत से जुड़े हुए लोंगो का बडा वर्ग फैला हुआ है । उनकी पीड़ा दुःख और दर्द से भरा जीवन पाठकों के सामने रखने में आप सफल हुए हैं । क्योंकि कहानियों के पात्रों की वेदना अपनी वेदना है, आपने वह वेदना स्वयं सही है, देखी है । इसलिए उनका संघर्ष आपका अपना संघर्ष बन गया है । जोशीजी एक साथ ही ग्रामीण और नगरीय संघर्षशील जीवन की विविधताओं को कुशलता से चित्रित करते हैं ।

जोशीजी का कथा साहित्य अनुभव का साहित्य है । इसलिए उनकी कहानियों में एक नयी विचारधारा प्रवाहित हुई दिखाई देती है ।

कहानी के बारे में हिमांशु जोशीजी के विचार :-

साक्षात्कार के आधारपर हिमांशु जोशीजी के कहानी संबंधित विचार हम प्रस्तुत करने जा रहे हैं । साक्षात्कार में जोशीजी को ।) " इक्यावन कहानियों पर प्रश्न पूछा गया - - - " कहानी एक कल्पना । एक सच । नहीं, जीवन का यथार्थ । नहीं, जीवन का जीवित अयथार्थ । " अपनी कहानी के संदर्भ में इस टिप्पणी के किस संदर्भ को स्वीकार करेंगे इस प्रश्न का उत्तर देते हुए जोशीजी कहते हैं - " कहानी यथार्थ और कल्पना के ताने - बाने से बनती है । इसलिए वह एक सीमा तक बहुत सच है और दूसरी सीमा तक बहुत झूठ । लेकिन लेखक इस झूठ और सच के सम्मिश्रण से एक तीसरा यथार्थ प्रस्तुत करता है, वह यथार्थ सच और झूठ का सम्मिश्रण होते हुए भी पाठक को सच लगता है और इसलिए कहानी, जिसका अर्थ स्वयं में सच नहीं है, सच लगने लगती है । जहाँ तक मेरी कहानियों का प्रश्न हैं, मैने मात्र कल्पना आधारित कभी कुछ लिखने का दुस्साहस नहीं किया । जो कुछ भी लिखने की

कोशिश की उसे कहीं भोगे हुए यथार्थ और देखे हुए यथार्थ एवं सुने हुए, समझे हुए यथार्थ के समीप देखा । "[7]

2) स्वतंत्रता के बाद " नई कहानी " के नामकरण पर हिन्दी कहानी साहित्यकों में बहुचर्चा हुई । और नयी कहानी नाम निश्चित हुआ था । इस आन्दोलन के बारे में अपने साक्षात्कार में कहा है -

" नयी कहानी " का आन्दोलन अधिक था । स्वाधीनता के पश्चात् हमारा परिवेश, हमारा आचार - व्यवहार, हमारा चिंतन, हमारी जीवन शैली आदि में अनेक परिवर्तन स्वाभाविक था, लेकिन जिस तरह " नयी कहानी " का आन्दोलन चला, कहीं उसमें कुछ कमी लगती है । पश्चिम का प्रभाव स्वाधीनता के बाद बाढ़ की तरह भारत और भारत जेसे अनेक विकासशील देशों को प्रभावित करता रहा । इसमें बहुत - सी अच्छाइयाँ थीं, तो कमियाँ भी कुछ कम नहीं थी । व्यावसायिकता का इसमें महत्व बढ़ा और मानव - मूल्यों एवं मानवीय दृष्टिकोण में कुछ गिरावट आयी । औद्योगिक विकास, विस्तार के लिए हाथ - पाँव छटपटा रहा था और मनुष्य इसके साथ - साथ बौना और अधिक बौना नजर आने लगा था । मुझे लगता है कि इन सारी परिस्थितियों एवं स्थितियों की उपज रहा " नई कहानी " का आन्दोलन ।"[8]

3) नयी कहानी के आन्दोलन के विरोध में जो सचेतन , आँचलिक, अकहानी के आन्दोलन खड़े हुए, उसके बारे में हिमांशुजी कहते हैं - ' अकहानी कहानी नहीं - कहानी से भी कहीं एक कदम आगे की स्थिति थी । दूसरा आन्दोलन आँचलिक कथा का था । इसके दौर में अच्छी कहानियाँ लिखी गयी जिसमें आम आदमी का जीवन संघर्ष प्रतिबिंबित हुआ । इसके पश्चात् प्रेमचंद की परम्परा की फिर दुहाई दी जाने लगी और इस आम आदमी से प्रेरित जो आन्दोलन चला, वह था ' समान्तर कहानी ' आन्दोलन ।"[9]

4) इन आन्दोलनों को लेकर जोशीजी को प्रश्न पुछा गया - इस दौर में आपका रचनाकार किस आन्दोलन से प्रभावित हुआ होगा इस पर हिमांशु जी का कथन है - " कभी भी । किसी भी भाषा में, सही साहित्य मात्र आन्दोलनों से प्रभावित नहीं होता । बल्कि आन्दोलन साहित्य का अनुगमन करते हैं । फैशन या चर्चा में रहने के लाभ उठाने के लिए जो आन्दोलन

समय - समय पर होते हैं वे विशेष प्रभाव नहीं छोड पाते । यों परिस्थितियाँ बदलती हैं अनुभवों के दायरे बढ़ते हैं और सतत जीवन संघर्षों से दृष्टि में भी परिपक्वता ही नहीं कहीं पैनापन भी आता है और कभी - कभी दृष्टीकोण में भी परिवर्तन दीखने लगता है ।"[10]

5) उन आन्दोलनों का सम्बन्ध सनातन मूल्यों से नहीं था, इसलिए वे उससे परे रहे - इसपर "आठवाँ स्वर " में उनका कथन है, - " उन आन्दोलनों का सम्बन्ध किन्ही सतत, सनातन मूल्यों से नहीं, बल्कि कहा जा सकता है साहित्यिकता से अधिक सतही व्यावसायिकता से रहा है । "[11]

6) स्त्री - जीवन की समस्याओं पर जोशीजी का कथन इसप्रकार है - " हमारा समाज अतिवादी है । एक ओर नारी को अत्याधिक पूजा, श्रध्देय एवं महान् माना गया है । इतना महान् कि उसे देवत्व के नजदीक स्थापित किया गया । नारी - शक्ति एक विलक्षण शक्ति का पर्याय रही । यह यथार्थ से ऊपर की स्थिति थी, दूसरी ओर अति हुई उसके शोषण की । समाज की सम्यक दृष्टि के लिए नारी एवं पुरुष दो वर्गो में समन्वय एवं सामंजस्य यदि न होगा तो समाज विघटित होगा ही । अनंतकाल से चला आ रहा यह अंतर कभी - कभी अनेक प्रश्न - चिन्हों को जन्म देता है । नारी मात्र नारी नहीं, मानव जीवन की धुरी भी है, यह सत्य जब ओझल होने लगा तो उससे सामाजिक विसंगतियाँ पैदा हुई । "[12]

7) मानवीय संवेदनाओं को जगाने के लिए " फंतासी का उपयोग कहानीकार करते हैं - इसपर जोशीजी का कथन है - " हमारी मानवीय संवेदनाएँ कहीं दिन - प्रतिदिन के आघातों से किंचित थोथरी हो गयी हैं, इन्हें अधिक सम्प्रेषणीय बनाने के लिए कभी - कभी फेंटेसी भी मुझे अपनी ओर आकृष्ट करती है ।"[13]

इन विचारों से यही प्रमाणित होता है कि वे साहित्य को जीवन का दर्पण मानते हैं और मानवीय संवेदना को जगानेके लिए " फंतासी " का उपयोग करते हैं । और आत्मसात किये हुए अनुभवों का यथार्थ चित्रण करते हैं । जोशीजी किसी भी एक आन्दोलन के पीछे नहीं रहे इसलिए उन्हें आन्दोलन के कटघरों में बाँधना युक्तिसंगत नहीं होगा । क्योंकि नई कहानी को ग्राम - कथा, नगर - कथा, कस्बाई - कथा, आँचलिक - कथा आदि में बांधने का

प्रयास हो रहा था । परन्तु नये कहानीकार तो जीतेजागते आदमी की यथार्थ कहानी लिख रहे थे और जीवनानुभव ही कहानी बन गया था । जोशीजी ने भी अपनी कहानियों में देखे हुए, भोगे हुए और सुने हुए यथार्थ को ही चित्रित किया है ।

हिमांशु जोशी जी का कहानी साहित्य अनुभूति के धरातल पर लिखा हुआ है । उनकी कहानियों के मुद्दे इसप्रकार हैं -

1) आपकी कहानियों में निम्नवर्ग तथा मध्यवर्ग के यथार्थ चित्र मिलते हैं ।

2) शोषक - शोषित के संघर्ष के चित्र मिलते हैं ।

3) पहाड़ी, देहाती जीवन से लेकर महानगरीय संवेदना तक आपका कथा - संसार फैला हुआ है ।

****

संदर्भ

अनु	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ
1)	हिमांशु जोशी	साक्षात्कार	4
2)	हिमांशु जोशी	आठवाँ स्वर	387
3)	हिमांशु जोशी	इक्कावन कहानियाँ	शुरु की बात
4)	हिमांशु जोशी	आठवाँ स्वर	385
5)	हिमांशु जोशी	आठवाँ स्वर	385
6)	हिमांशु जोशी	आठवाँ स्वर	385
7)	हिमांशु जोशी	साक्षात्कार	2
8)	हिमांशु जोशी	साक्षात्कार	2, 3
9)	हिमांशु जोशी	साक्षात्कार	9
10)	हिमांशु जोशी	साक्षात्कार	9
11)	हिमांशु जोशी	आठवाँ स्वर	388
12)	हिमांशु जोशी	साक्षात्कार	4
13)	हिमांशु जोशी	साक्षात्कार	9